International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-06-2020; Accepted: 22-06-2020; Published: 07-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 20-22

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में नारी संघर्ष

Alapati Bhanu Prasad
Lecturer in Hindi, Govt Degree College, Avnigadda, Andhra Pradesh, India

सारांश
नारी का संपूर्ण जीवन संघर्षरत होता है। नारी को हर घड़ी, हर क्षण संघर्ष करना पड़ता है। नारी का संघर्ष बहु आयामी है। प्राचीन काल से ही नारी पुरुष वर्ग से शोषित तथा पीड़ित थी। नारी प्रकृति से सहनशील होने के कारण अन्याय तथा अत्याचार सहती है। क्षमागुण में नारी धरित्री समान है। बर्दास्त के बाहर होने पर उसमें संघर्ष-चेतना जागृत होती है ।वर्तमान युग में नारी को अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। प्रकृति ने नर की अपेक्षा नारी को विशेष भाव प्रवण तथा संवेदनशील बनाया है। जहाँ पुरुषों के लिए बुद्धिपरक विचार धारा सहज गुण है , वहाँ स्त्रियों के मानस में श्रद्धा, विश्वास, संवेदना, कोमल भाव तथा सहानुभूति अपेक्षा कृत अधिक मात्रा में मिलती है। इस कारण नारियों को विभिन्न प्रकार के संघर्षों का समान करना पड़ता है। आधुनिक युग में शैक्षिक चेतना तथा व्यक्ति स्वातंत्र्य के कारण नारी में अनेक परिवर्तन हुए हैं। नारी अपने आप जीने के लिए तैयारी हो गयी है। माने वह अब किसी के कंधों पर बोझ होने की भावना को त्याग कर दी है। वह आत्मनिर्भर बन कर स्वयं अपना मार्ग निर्धारित करने लगी। जीवन में संघर्ष तथा परिश्रम करके अपना भविष्य उज्जवल बनाने का प्रयास करती है।

मूल शब्द: संघर्षमय जीवन, स्वाभिमान, ईमानदारी, संघर्ष-चेतना

प्रस्तावना

प्राचीन काल से आज तक समाज पुरुष-प्रधान ही रही । इस कारण नारियों पर अब तक अनेक अत्याचार किये गये। स्त्री को जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक पुरुष की छत्रछाया में ही बसना पड़ता है। बाल्यावस्था में पिता के संरक्षण में, विवाह के बाद पति के संरक्षण में तथा वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में नारी को रहना पड़ता है। इसी कारण नारी को सबला कहा गया है । पर धीरे-धीरे नारी की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है । सदियों से अशिक्षित, अज्ञान तथा अंधकार से जूझती नारी अपनी अस्मिता को जीवित रखने हेतु असीमित पीड़ा को छुपाए हुए विकास के सोपानों को पार करती जा रही है। समय के साथ-साथ नारी की स्थिति भी बदलती जा रही है। शिक्षा प्राप्त करना उसके लिए अनिवार्य अंग बन गया। शिक्षा प्राप्ती के बाद नारी का कार्य क्षेत्र बदल गया। घर की काज से लेकर बाहर की काम काज तक उसका कार्य क्षेत्र रूपांतरित हो गया। नौकरी करके पैसे कमाना प्रारंभ की। गृहिणी के साथ-साथ कार्यालयों का काम भी कर रही हैं। नारी अपने कार्य -क्षेत्रों में भी अनेक संघर्षों का सामना कर रही है। फिर भी नारी धीरज के साथ आगे बढ़ रही है।

"नारी बिचारी
पुरुष की मारी
तन से क्षुधित
मन से मुदित
लपक झपक कर
अन्त में चित्त।"1

इस सृष्टि का आधार स्त्री-पुरुष है। स्त्री-पुरुष के संयोग से ही इस सृष्टि का आविर्भाव हुआ है। पर समाज में पुरुष का जितना महत्व है उतना स्त्री का नहीं। स्त्री की महत्ता तथा स्त्री-पुरुष की पूरकता का विश्लेषण करते हुए डॉ.वल्लभपन्त तिवारी ने लिखा है कि- " पुरुष सत्यम है , प्रकृति माने स्त्री शिवम् तथा सुन्दरम् है। अतः स्पष्ट है कि प्राणी मात्र के जीवन में नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा दोहरी है। प्रकृति पुरुष की चित्तवृत्तियों की संचालिका है। वह विराट शक्ति की शाश्वत प्रेरणा स्रोत है , वह उसका उद्गम है।"2 स्त्री-पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के बिना यह सृष्टि रुक जाती है।

वैदिक काल से आज तक स्त्री का महत्व कम होता जा रहा है। बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सास आदि अनेक पात्रों के द्वारा अपना कर्त्तव्य निभाती रहती है। जिस देश में नारी की पूजा तथा आदर होता है, उस देश का विकास निरंतर होता जाता है। मनु ने नारी की महत्ता के बारे में स्पष्ट करते हुए अपना काव्य मनु संहिता में व्यक्त किया -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा स्तत्रा फल क्रिया।।"3

नारी प्रकृति के रूप में मूर्त होकर नर के लिए अनन्त काल से प्रेरणा तथा शक्ति का मूलश्रोत रही है। स्त्री केवल पुरुषों की ही नहीं समस्त देवताओं की भी जननी है। सृष्टी की साधन और प्रकृति का मूर्त रूप होकर पुरुष के लिए सौन्दर्य, प्रेम तथा आनन्द का कारण बनती है। इसीलिए नारी पूजनीय है । नारी में दैवत्व है, इसीलिए वह स्त्री तथा

शक्ति है। नर और नारी सृष्टि के दो मूल तत्व हैं। दोनों के सहयोग तथा समन्वय से ही सृष्टि की रचना हो रही है। गर्भधारण से लेकर शिशु का पालन-पोषण तक स्त्री अनेक कार्य करती रहती है। इसी कारण नारी को सृष्टि का आधार माना गया है। हमारी सभ्यता, संस्कृति तथा धर्म के निर्माण में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरूष की अपेक्षा नारी अधिक माननीय तथा संवेदनशील है। वात्सल्य, स्नेह, ममता, क्षमत्व आदि गुण पुरुष की अपेक्षा नारी में ज्यादा पाई जाती हैं। नारी की महत्ता के बारे में बताते हुए आशारानी जी ने कहा- "जीवन के स्वस्थ विकास के लिए नारी का पुरुष से भिन्न तथा पुरुष से नैतिक गुणों में श्रेष्ठ होना आवश्यक है। नारी यह न भूलि कि पुरुष भी नारी के बिना अकेला नहीं चल सकता है। वह भी स्वयं में इतना ही अपूर्ण है जितना की नारी, बल्कि अधिक ही, इसीलिए की नारी की छाया में वह सदा माँ के आँचल की-सी छाया खोजता है। उसके बिना अधिक उच्छृंखल, अधिक अनियंत्रित हो जाता है। जब नारी उसे नियंत्रित करके श्रेष्ठ मानवता की ओर अग्रसर कर सकती है ,तब पुरुष उससे भी श्रेष्ठ कैसे हो सकता है।"4

नारी शब्द का अर्थ

शाब्दिक रूप से नारी शब्द नर का समानांतर है। इस शब्द का प्रयोग मादा प्राणियों के प्रतीक के रूप में होता है। व्यापक रूप से नारी का स्थान नर से बढ़कर है। कोमलता, ममता, क्षमता, दृढ़ता आदि गुण पुरुष की अपेक्षा नारी में विशेष रूप से पाये जाते हैं। रूप, आकार, शरीर संगठन, कार्य तथा जीवन यापन की विविध परिस्थितियों में नारी विधाता की अपूर्व सृष्टि है। भारतीय वाङ्मय में नारी के लिये अनेक नाम प्रचलित हैं। उन नामों से नारी के समग्र स्वरूप के विभिन्न पक्षों का बोध होता है। नर तथा नर धर्म से संबंधित होने के कारण उसे नारी कहा गया है। नारी नाम ही के कारण अनायास नर माने पुरुष से उसका सापेक्ष संबंध जुठा पाता है। वैदिक काल में नारी को अत्यंत सम्मान दिया। नारी पुरुष को मस्त, पुलकित और हर्षित करने में समर्थ होने के कारण 'प्रमदा' कहलाती है और दूसरी ओर स्वयं लालसमयी होने के कारण तथा पुरुषों में लालसा जागृत करने के कारण 'ललना' नाम ग्रहण करती है। नारी कामना जागृत करने के कारण 'कामिनी' तथा मानप्रिय होने के कारण 'मानिनी' कहा जा सकता है। नारी पुरुष की अनुगामिनी मात्र न हो कर सह धर्मिणी तथा सहचरी है। नारी को 'वामा' भी कहते हैं। क्यों कि नारी का स्थान पुरुष के वामपक्ष में है। पुरुष का दाहिना हाथ कर्म और पुरुषार्थ का प्रतीक है। नारी के सहयोग से ही पुरुष सफलता तथा विजय प्रप्त कर सकता है। गृह में पुरुष की अपेक्षा नारी अधिक दायित्व का निर्वाह करती है। इसी कारण नारी को 'गृहिणि' कहा है। नारी अपने जीवन में विभिन्न रूपों में अपना दाइत्व निभाती है। जैसे माता, पत्नी, पुत्री, बहन आदि। नारी में लज्जा , रागात्मक चेतना, कमनीयता तथा व्यवहार दक्षता है। इसके अतिरिक्त दैहिक एवं मानसिक विशिष्ठ तत्वों के कारण उस में अर्थाधिक्य भी विद्यमान है।

नारी के विभिन्न रूप

इस सृष्टि में नारी का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारी के अनेक रूप हैं। जैसे माँ, बहन, पत्नी, पुत्री आदि। नारी माँ बनकर बच्चों का लालन-पालन करती तथा ममता लुटाती है। प्रेमिका बन कर मार्ग दर्शक तथा जीवन को सरस बनाती है। बहन बनकर स्नेह की वर्षा करती है। पत्नी बनकर पुरुष की सह भामिनी बनती है। नारी की विभिन्न रूपों में कुछ शाश्वत हैं तथा बहुत ही गौरव पूर्ण है। कुछ ऐसी रूप हैं , जिनका अस्तित्व भी कोई कम नहीं। नारी के शाश्वत रूपों में माता, पत्नी तथा प्रेमिका है। नारी की इन शाश्वत रूपों के कारण नारी की महिमा का गुणगान किया जाता है। नारी के अन्य रूपों में बहन, भाभी, ननद, देवरानी, जेठानी, सास तथा बहू आदि है।

नारी संघर्ष-चेतना

मानव जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। इसके बिना हमारा जीवन आगे नहीं बढ़ता। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमें अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। संघर्ष के बिना व्यक्ति का जीवन निरर्थक हो जाता है। संघर्ष में ही व्यक्ति ,परिवार और समाज निहित है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास के लिए संघर्ष-चेतना की आवश्यकता है। संघर्ष के कारण ही मानव अपने वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन स्तर को अधिक ऊँचा उठा सकता है। व्यक्ति को जितना आगे बढ़ना है उतना संघर्ष उन्हें करना पड़ता है। संघर्ष हीन मनुष्य पत्थर के समान है। संघर्ष के बिना मानव का विकास संभव नहीं है। किसी भी व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए संघर्ष-चेतना की आवश्यकता है। संघर्ष जिन्दगी की अनिवार्य शर्त है। धैर्यवान अपने जीवन में आने वाले अनेक संघर्षों का सामना करते हुए आगे बढ़ता है। पर कायर संघर्ष-चेतना से भयभीत हो जाते हैं। साहसी व्यक्तियों का मूलमंत्र संघर्ष चेतना ही है। मानव जीवन में संघर्ष चेतना की भूमिका सृजनात्मक तथा सकारात्मक होना चाहिए। तभी संघर्ष चेतना मानव के लिए वरदान हो जाता है। यदि मानव अपने संघर्ष चेतना को नकारात्मक या आतंकवाद में बदले तो वह उनके लिए अभिशाप बन जायेगा। इससे समाज तथा देश के लिए खतरा है। कहानीकार अब्दुल बिस्मिल्लाह का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। जो संघर्षों का सामना करेगा, वही जीवन में आगे बढ़ेगा। आग में जलाने से ही सोना चमकती है। संघर्षमय जीवन ही विकास का मूल मंत्र है। बिस्मिल्लाह जी का आरंभिक जीवन अत्यंत संघर्षमय रहा। छोटी उम्र में ही माता-पिता को खो जाना, रिश्तेदारों के चीत्कार आदि उनको संघर्षमय बना दिया।

नारी को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के दायित्वों को निभाते समय अनेक संघर्षों सामना करना पड़ता है।अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में नारी संघर्ष-चेतना पर्याप्त रूप से मिलता है।

उसकी 'पुरानी हवेली' की देवरानी, 'नरलीला' की कमली, 'दंड' कहानी की लखिया, 'इन्द्रधनुष' की नन्दिनी आदि कहानियों में नारी संघर्षों के बारे में चित्रण किया गया, जो अपने संघर्षों का सामना करते

हुए चेतना दिखाईं । नारी जब तक अपने माता-पिता के घर में रहती है तब तक उसकी दुनिया अलग होती है । विवाह के पश्चात वह नई दुनिया में प्रवेश करती है । इन्द्रधनुष कहानी में नंदिनी के पिता उसे कहता है- "नैहर सब दिन काम नहीं देता । लड़कियों का घर ससुराल होता है और पति परमेश्वर ।"5 ससुराल में नारी को अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है । पति, सास-ससुर तथा ननदों की झिडकियाँ सहना पड़ता है । नंदिनी के काम करते समय ननद उससे काम छीन लेती थी तथा वह खाना खाने के वक्त कहती थी - " काम करने वक्त तो जी चुराती है और खाने वक्त सोरों ढकोस लेती है । बड़ी बेशर्मी औरत है भई यह । कहाँ फँस गया रे मनोहर तू ।" 6 इसके साथ-साथ सास कहती - "अब जो हाथ लगाया खाने में, तो अपने लाडले का मांस खाया । रांड कहीं की ।"7 इस प्रकार एक स्त्री अन्य स्त्री से शोषित बन जाती है । 'तलाक के बाद' कहानी की साबिरा ससुराल में ससुर द्वारा हमेशा प्रताड़ित रहती है । पिता की एक गलती के कारण उसे ससुलाल में हमेशा गाली-गलीज और उपेक्षा ही मिलती है । आखिर उसे तलाक भी दिया जाता है ।

'दंड' कहानी की लखिया स्वाभिमानी तथा ईमानदार नारी है । छोटी-छोटी बातों को लेकर उसके पति उसे पीटता रहता है । लखिया अपने मन की जो विद्रोह भावना है वह अपने पति नंदू से कहना चाहती है- "मुझे क्यों पीटते हो, क्या कोई मेरी नियत खराब थी अरे जिसने तुम्हारी मेहरारू की इज्जत पर हाथ डाला, उसे जाकर पूछो, उसे जान से मार डालो ।"8 परंतु लखिया की यह चेतना आंतरिक ही रह जाती है । बाहर आने न देती, क्योंकि वह अपने पति से इस बात के लिए डरती है कि कहीं वह उसे छोड़कर चला न जाए । चाहे तो नारी अकेला जी सकती, पर ऐसा नहीं करती । समाजिक तथा वैवाहिक बंधनों को मान्यता देना चाहती थी ।

'दरबे के लोग' कहानी में मजदूर औरतों का उच्चवर्गीय गिरस्ते लोगों द्वारा शारीरिक शोषण करने का चित्रण है । उसको शरीर के बदले में सिर्फ मजदूरी मिलती है । "कारीगर भैंस का माँस खाते हैं और गिरस्ता लोग औरत का । इन्हें घर की औरत का माँस अच्छा नहीं लगता । कारीगरों की औरतों का माँस अच्छा लगता । उनकी इस अच्छा लगनेवाली वृत्ति को इन दरबों में रहनेवाले लोग हमें संतुष्ट करते आए हैं और जिसने संतुष्ट किया, उसे जमाने की सबसे नायाब चीज अर्थात् मजदूरि मिलती रही और जिसने इनकार किया उन्हें दरबे से निकाल दिया गया ।" 9

बिस्मिल्लाह ने अपनी कहानी मिठ्ठा कहानी में मिठ्ठा शाहुकारों की शोषण के विरुद्ध लड़ती है । जब भल्लू सेठ कर्ज के रूप में गंगादीन की सारी फसल लूटकर ले जाना चाहता तब मिठ्ठा कहती है - कैसी बातें करते हो सेठ तुम हर बार पूरी फसल ले जाते हो फिर भी तुम्हारा बकाया नहीं खत्म होता । 10

निष्कर्ष

बिस्मिल्लाह के कहानी साहित्य की नारियाँ पहले अपना विद्रोह सक्षम रूप से प्रकट नहीं कर पाती, क्योंकि वह मान-मर्यादा, संयम तथा संबंधों के अधीन रहकर किसी पारिवारिक जिम्मेदारी और सामाजिक भय के कारण कड़ा विद्रोह नहीं कर सकती । पर नारी जब अपनी अस्मिता तथा आत्माभिमान खो देना पड़ता, तब वह अपनी चेतना को व्यक्त करने में संकोच न करती । क्योंकि नारी धरित्री के समान है ।

संदर्भ सूची

1. रघुवीर सहाय रचनावली (भाग) - डॉ.सुरेश वर्मा, पृ.92
2. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानियों में संबंध विघटन और नारी संघर्ष-चेतना - डॉ.सैय्यद मेहरून, पृ.14
3. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानियों में संबंध विघटन और नारी संघर्ष-चेतना - डॉ.सैय्यद मेहरून, पृ.18
4. भारतीय नारी : दशा, दिशा - पृ.172
5. इन्द्र धनुष - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ.274
6. इन्द्र धनुष - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ.274
7. इन्द्र धनुष - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ.274
8. दंड - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ. 159
9. दरबे के लोग - अब्दुल बिस्मिल्लाह , पृ. 131
10. मिठ्ठा - अब्दुल बिस्मिल्लाह, पृ.385